संयम-सदाचरण से विष्वमहाराजन्

विष्व के भावी कर्णधार-जवानों! अच्छी तरह अवलोकन करो कि कहाँ-कौन सी कमी या त्रुटि है। संसार के हर नागरिक को स्वस्थ-सुडौल-षिक्षित और कर्म कुषल बनना है। ज्ञान-विज्ञान, कला-कौषल को बढ़ाकर धरा को सम्पन्न- समृद्ध करना है। हरेक नर-नारी को विभूति सम्पन्न करके सदियों के अज्ञान-अंधकार, दुर्बलता और अत्याचार को मिटाना है। हरेक की कमी-कमजोरी को अपनी समझ कर दूर करना है। बल-वीर्य-पराक्रम का समाधान और ज्ञान-विज्ञान-सौन्दर्य से आभूशित होकर भूमण्डल पर उदित होना है। सदाचरण और संयमयुक्त होकर समस्याओं का समाधान करना है। प्रत्येक को विष्व महाराजन्-विष्व महारानी लायक बनाना है। पुनः जागो और नवयुग लाने के लिये सबमें देवत्व का सृजन करो। भोग-विलास और व्यसन-बुराइयों को त्याग करके जितेन्द्रियता और सदाचरण से फिर से विष्व का सिरमौर बनो।

सूर्य में तेज ही नहीं ताप-आकर्शण और परिपाक भी है। समुद्र के जल से बादल बनते, बरस कर धरा को सस्य-ष्यामला बनाये रखते हैं। केवल सूर्य हो परन्तु पानी नहीं हो तो धरती झुलस कर राख बन जायेगी। पानी तो हो पर सूर्य की रोषनी न हो तो सब कुछ सड़-गल कर दुर्गन्धमय हो जायेगा। सूर्य व जल के सम्मिलन से ही सारा जगत विभूतिमय, आकर्शक और सर्वगुण सम्पन्न दिखायी दे रहा है। इसी प्रकार न केवल अग्नि से और न ही मात्र जल से निर्वाह हो सकेगा। पानी और अग्नि परस्पन विरोधी हैं। परन्तु विधिवत जब दोनों का संयोग किया जाता है तो जल-विद्युत व वाश्प षक्ति उत्पन्न होने लगती है। उनके द्वारा अति पराक्रमी कार्य बड़े आसानी से किये जाते हैं। भाप वाले रेल इंजन अकेले कितने डिब्बों व अगणित यात्रियों को उनके गन्तव्य तक षीघ्रता से पहुँचा देते हैं। यह उसमें जल और अग्नि के द्वारा निर्मित भाप का ही कमाल है। विषाल जलयान सागर के बक्षास्थल को चीरता हुआ आगे बढ़ने में ऐसी ही भाप का उपयोग करता है। अतितीब्रगामी हवाई जहाज, परिषुद्ध पेट्रोलियम के माध्यम से इस पार से उस पार तक उड़ता रहता है जबकि अग्नि व जल परस्पर विरोधी तत्व हैं। परन्तु इन दोनों के मिश्रण से बना डीजल-पेट्रोल क्या से क्या कर दिखाता है ?

पानी (H_20) के अनुसार जल में अग्नि अन्तर्निहित है। परन्तु अग्नि पर पानी डालने से या पानी में अग्नि को डालने से अग्नि बुझ जायेगी। अग्नि तापक-प्रकाषक व आकर्शक है। जल सिंचक व पोशक है। आकाष और पृथ्वी के बीच सूर्याग्नि प्रज्जवलित है। पृथ्वी पर जल, नदी-तालाब-सागर के रूप में है। सूर्य अपने ताप से समस्त आकाष मण्डल को प्रकाषित करता है। पृथ्वी के जल को अपनी किरणों से तप्त करके भाप से बादल में बदलकर धरा को हरा-भरा रखता है। अग्नि व जल के संगति से ही पृथ्वी प्राणियों की पोशणा करते हुये रत्नगर्भा कही जाती है। यदि आप भी दिव्य गुणों से यषस्वी बनना चाहते हैं तो अपने अन्दर अग्नि और जल का संगतिकरण करना होगा। वीर्य अग्नि है और संयम पानी है। दोनों का समन्वय करने से वाश्प की ही तरह चैतन्य ऊर्जा उत्पन्न होगी। संसार की प्रगति को वही अति तीब्र गति देगी। जवानी अग्नि के समान है तो जितेन्द्रियता जल के समान। इनके संगतिकरण से उत्पन्न ऊर्जा विष्व की विसंगतियों और न्यूनता को परिपूर्ण कर देगी। सौन्दर्य अग्नि है तो सदाचार जल। सौन्दर्य व सदाचार के सम्मिलन से नैतिक ऊर्जा उत्पन्न हो दुराचार व भ्रश्टाचार को समाप्त कर देगी।

जब षरीर कृषकाय और मन मृतप्राय हो जाये तो बुढ़ापे वाले सदाचरण से क्या बन सकेगा ? स्टीम जैसे यौवन और सदाचार के संयोग से षुभ व श्रेश्ठ की सिद्धि होगी। यौवन के तूफानों से घबराना नहीं चाहिये। वायु, अग्नि, आकाष पृथ्वी और जल ये पाँचों ही तत्व देव समान हैं। आकाष तत्व अतिषय सूक्ष्म परन्तु व्यापक है। बाकी के चारों ही तत्व उसमें स्थित हैं। वायु अरूप पर सदा गतिषील है। सभी प्राणी पृथ्वी पर ही निवास करते हैं।उसी के ऊपर जल व अग्नि की सहकारिता से सभी भोग्य पदार्थो की उपलब्धि होती है। इसीलिये पंच तत्वों में अग्नि और जल

का सर्वाधिक महत्व हो गया है।

कलियुग में अग्नि का उपयोग बढ़ता ही जा रहा है। फलतः क्रोध विविध रूपों से आतंक, पापाचार, बलात्कार के रूप प्रकट होता ही रहता है। सच्चे स्नेह से निर्माणता की तरफ जाने की बजाय देह अभिमानवष काम विकार में डूबते रहते हैं। लोभवष संग्रह करके अपने-पराये के मोहजाल में डूबे हुये हैं। एक तरफ गरीबी का ताण्डव तो दूसरी तरफ उपयोग से मोटे-मलिन और तौहीन हो रहे हैं। जगत में पाँच तत्व हैं तो विकार भी पाँच हैं। पाँचों तत्वों का विकृत प्रयोग पाँचों विकारों में फँसता जा रहा है। फलस्वरूप मानुश वेडौल बन बुराइयों के गर्त में गिरते जा रहे हैं। अब पाँचों विकारों से पिण्ड छुड़ाना है तो पाँचों तत्वों को षुभ भावनाओं का दान देते हुये उनके दुरुपयोग से बचे रहिये अन्यथा यह तत्व विकराल रूप

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स

www.bkvarta.com